International Journal of Literacy and Education

E-ISSN: 2789-1615
P-ISSN: 2789-1607
Impact Factor: 5.69
IJLE 2022; 2(2): 38-39
www.educationjournal.info
Received: 06-05-2022
Accepted: 10-06-2022

ललन कुमार राय
प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष अर्थशास्त्र विभाग, श्री लक्ष्मी किशोरी महाविद्यालय सीतामढ़ी, बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर, बिहार, भारत

Corresponding Author:
ललन कुमार राय
प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष अर्थशास्त्र विभाग, श्री लक्ष्मी किशोरी महाविद्यालय सीतामढ़ी, बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर, बिहार, भारत

आर्थिक विकास में तकनीक का महत्व

ललन कुमार राय

सारांश
आर्थिक सामाजिक विकास के संदर्भ में तकनीक का महत्वपूर्ण योगदान होता है व्यक्ति के आर्थिक जीवन में मुख्य समस्या अपने अंतहीन आवश्यकताओं के बीच चुनाव की है। कोई भी उपभोक्ता या व्यक्ति तब अधिक संतुष्ट होगा जब वह अपने सीमित साधनों से अपनी असीमित आवश्यकताओं को पूरा करने का प्रयास करेगा। इसी प्रकार किसी भी देश के आर्थिक विकास के लिए कौन सी तकनीक उपयुक्त होगी, यह वहाँ पर उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर करता है। सामान्यतः अर्थशास्त्र में आर्थिक विकास के दो तकनीक श्रम प्रधान एवं पूँजी प्रधान तकनीक अपनाये जाते है।

कूट शब्दः श्रम गहन तकनीक, पूजी गहन तकनीक

प्रस्तावना
देश में कुल उत्पादन और उसकी लागत इस बात पर निर्भर करता हैं कि उसमें पूजी प्रधान तकनीक का प्रयोग किया गया है या श्रम प्रधान तकनीक का वैसे अर्थशास्त्र में तकनीक को पूंजी प्रधान तकनीक, श्रम प्रधान तकनीक व नव प्रवर्तन के रुप में देखा जाता है। सामान्यता श्रम प्रधान तकनीक से आशय उत्पादन प्रकिया में कम पूंजी के साथ श्रम की अधिक मात्रा का प्रयोग होता है। दुसरी ओर पूंजी प्रधान तकनीक से आशय अधिक पूंजी के साथ श्रम की कम मात्रा का प्रयोग होता है। यहॉ स्पष्ट कर देना उपयुक्त होगा कि एकल तकनीक का तात्पर्य यह कतई नहीं है कि उत्पादन प्रकिया में केवल एक ही तकनीक का प्रयोग होगा। तकनीक अपनाने के लिए महत्वपूर्ण यह है कि किस देश में कौन सा साधन प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है।
ए0के0 सेन ने कहा है कि, ''विभिन्न तकनीको का, प्रायः अभिप्राय होता है कि अर्थव्यवस्था के निष्पादन के बहुत विभिन्न प्रयत्नों के साथ आर्थिक विकास की बिल्कुल विभिन्न कुटनीतियॉ।'' आर्थिक विकास में नव प्रर्वतन भी तकनीक से जुड़ा हुआ तथ्य है नव प्रवर्तन शब्द को अर्थशास्त्र, में शुम्पीटर ने अधिक महत्व दिया है। नव प्रवतेन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें खोज का उपयोग किया जाता है। इस प्रकार नव प्रवर्तन विकास की प्रक्रिया का सर्वाधिक महत्वपूर्ण पक्ष है। वस्तुतः तकनीक एक ऐसी प्रक्रिया हैं जिसके अधीन विद्यमान संसाधनों से नयी वस्तु या सेवा उत्पादित की जाती है या विद्यमान संसाधनों का प्रयोग नये तरिके से किया जाता है।
आर्थिक विकास के संदर्भ में अर्थशास्त्र में तटस्थ एवं अतटस्य तकनीक का भी जिक्र होता है। जब एक तकनीकी परिवर्तन न तो पूंजी–बचत और न ही श्रम बचत करने वाला हो तो उसे तटस्य तकनीक कहा जाता है। इसके विपरित जब परिवर्तन पूंजी बचतकारी और श्रम बचतकारी हो तो उसे अतटस्य तकनीकी परिवर्तन कहते हैं। हिक्स के अनुसार एक तकनीक तब तटस्य कहा जाता हैं जब वह श्रम तथा पूंजी की सीमांत उत्पादकता को उसी अनुपात में बढ़ाता है।

उपयुक्त तकनीक
किसी भी देश के विकास के लिए आवश्यक है कि वह देश प्राकृतिक संसाधनों के मामले में कितना प्रचुर है। जिस भी देश में अवसर भी उतने अधिक होंगे। आज के समय में, विकसित देशों जैसे की भारत भी प्राकृतिक संसाधनों के मामलों में प्रचुर है लेकिन उसके पूर्ण दोहन न होने के कारण हम आज भी पिछड़े हुये है। 2011 की जनगणना के अनुसार भारत की कुल आवादी 121 करोड़ से भी अधिक है जिसमें की कार्यशील जनसंख्या कुल जनसंख्या का 58.7 प्रतिशत (15–59 वर्ष) है। भारत की इस कार्यशील जनसंख्या अर्थात श्रम शक्ति को प्रयोग श्रम गहन तकनीक के रुप में किया जा सकता है। भारत जैसे विकासशील देश अपने यहाँ उपलब्ध प्राकृतिक संसाधन, श्रम शक्ति का प्रयोग उत्पादन कार्य एवं विकास में कर सकते है।
भारत में, देश के विकास के लिए अपने मजबूत पक्ष को अधिक महत्व देना होगा। कोई भी देश प्रौद्योगिकी के साथ विकास के लिए श्रम प्रधान तकनीक या पूंजी प्रधान तकनीक का चुनाव कर सकता है। भारत के पक्ष में यह है कि वह प्रौद्योगिकी के साथ श्रम प्रधान तकनी का प्रयोग करें। जिससे उसके उत्पादन की प्रत्येक इकाई पूंजी के सहयोग से श्रम की उत्पादकता को बढ़ाया जा सके। किसी भी देश में तकनीक के चुनाव में वहाँ की आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक एवं जनसंख्या

की मात्रा की स्थिति पर निर्भर करता है। सम्बन्धित देश के विकास के लिए किसी एक तकनीक का चुनाव हितकारी नही हो सकता । अतः यह देश में उपलब्ध उत्पादन के साधनों के उपलब्धता पर निर्भर करता है। यह पहले ही स्पष्ट हो गया है कि भारत में श्रम शक्ति की उपलब्धता अत्यधिक है। भारत की श्रम शक्ति के सम्बन्ध में कहा जाता हैं कि यहा की अधिकतर श्रम शक्ति अकुशल है। लेकिन देखा जाय तो इस समस्या को आसानी से सुलझाया जा सकता है।

इस समस्या को देखते हुए भारत सरकार ने कौशल विकास योजना की शुरुआत 15 जुलाई, 2015 को की थी। भारत में श्रम की आपूर्ति एक तरह से असिमित है और यहॉ की अधिकतम आवादी लगभग 21.9 प्रतिशत गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन कर रहा है अर्थात 269.9 मीलियन लोग गरीबी रेखा के नीचे जीनव यापन कर रहे है। इसमें से अधिकतर लोग श्रम की अधिक आपूर्ति अधिक होने के कारण जीवन निर्वाह मजदूरी पर भी काम करने के लिए भी तैयार रहते है। इसको दुसरी तरह से समझा जा सकता है कि, लोग काम करने के लिए तैयार है लेकिन निर्वाह मजदूरी स्तर पर भी काम नही है। विकासशील देशों की जनसंख्या का अधिक होना देखा जाये तो एक समस्या भी है और एक समाधान भी है। समस्या के रुप में हम कह सकते हैं कि विकास के सम्बन्ध में किया गया प्रत्येक बढ़ती हुई जनसंख्या के कारण प्रति व्यक्ति आय को या तो स्थिर रखता है या फिर कम कर देता है वर्तमान समय में भारत की एक बड़ी समस्या लोगों की आय स्थिर हो जाना या आय का कम हो जाना हैं, जिसके कारण लोगो की क्रय शक्ति कम हो जाती है। अर्थशास्त्र में यह सर्वमान्य नियम है कि किसी भी देश के विकास के लिए वहॉ के निवासियों की क्रय शक्ति का बढ़ना जरुरी है। क्रय शक्ति में वृद्वि के कारण ही मॉंग में वृद्वि होती है। अर्थव्यवस्था में मांग का होना एक महत्व का विषय है।

आर्थिक तकनीक की चुनौती

भारतीय अर्थव्यवस्था को गति देने के लिए नवाचार एवं प्रोद्योगिकी तकनीक का महत्वपूर्ण योगदान है। तकनीकी अभाव के कारण आर्थिक विकास को स्थिर बनाये रखना एक चुनौती है। जिसके कारण अनेक समस्याएं है–

रोजगार की समस्या

भारत में बढ़ती हुई जनसंख्या के अनुपात में रोजगार का सृजन नही हो पाया है। इसका मुख्य कारण श्रम प्रधान तकनीक को कम महत्व देना है श्रम प्रधान तकनीक को अपनाकर रोजगार को बढ़ाया जा सकता है। भारत में बेरोजगारी को दो भागो में बाटा जा सकता है– शहरी और ग्रामीण बेरोजगारी। शहरो में जहॉं लोग अल्प बेरोजगारी से परेशान होते है तो वही गॉंव में लोग अदृश्य बेरोजगारी से परेशान होते है। सेन्टर फॉर मानिटरिंग ऑफ इण्डियन इकनॉमी ;ब्डप्द्ध की 02 मार्च, 2020 को जारी ताजा रिपोर्ट में यह बात सामने आई हैं कि फरवरी 2020 में बेरोजगारी की दर बढ़कर 7.78 प्रतिशत हो गयी है। संयुक्त राष्ट्र की 2014 की एक रिपोर्ट के मुताबित भारत दुनिया का सबसे युवा देश है जहा लगभग 35.6 करोड़ आवादी युवाओं की है। अधिकतर बेरोजगार गॉंवों में निवास करते है। और इन युवाओं में बहुत से युवा अदृश्य रुप से बेरोजगारी से ग्रसित होते हैं। श्रम प्रधान तकनीक से इन बेरोजगार युवाओ को रोजगार भी दिया जा सकता है तथा साथ ही देश की उत्पादन क्षमता को भी बढ़ाया जा सकता है।

क्रय शक्ति में अन्तर

हमारे देश में आर्थिक विकास के लिए विकासित देशो के पूंजी प्रधान तकनीक का अत्यधिक नकल किया है। चूँकि भारत जैसे विकासशील देशों में जनसंख्या का भारी दबाव होता है और अर्थव्यवस्था भी ग्रामीण और शहरी अर्थव्यवस्था में विभक्त होती है। श्रम प्रधान तकनीक का उचित प्रबन्धन न होने के कारण गॉंव और शहरों के लोगो की क्रय शक्ति में अन्तर होता है। सामान्यत गॉंव में निवास करने वाले निवासियों की क्रय शक्ति कम होती है। इसका मूल कारण श्रम की अत्यधिक उपलब्धता व बेरोजगारी है।

पूंजी गहन तकनीक की समस्या

भारत जैसे विकासशील देशो की एक बड़ी समस्या रही है की वे पूंजी प्रधान तकनीक को अधिक महत्व दिये है। पूँजी प्रधान तकनीक अपनाने से कार्य तो जल्दी हो सकता है लेकिन बेरोजगारी दूर नही हो सकती। पूंजी प्रधान तकनीक अपनाने से समाज में आर्थिक असमानता में वृद्वि होती है। पूंजी प्रधान तकनीक अपनाने से पूंजी और मॉंग एक खास वर्ग के पास एकत्रित होने लगती है। पूंजी प्रधान तकनीक में मशीनों का अधिक प्रयोग होता है और मशीनो के अधिक प्रयोग के कारण बेजोजगारी में वृद्वि होती है। दूसरी ओर श्रम का बड़ा हिस्सा बेरोजगार, आय एवं मांग विहिन हो जाता है।

श्रम प्रधान तकनीक के माध्यम से विकास

भारत जैसे विकासशील देशो में श्रम गहन तकनीक को अपनाकर आर्थिक विकास किया जा सकता है। इस सम्बन्ध में अर्थशास्त्री आर्थर लुइस के सिद्वान्त का अनुपालन किया जा सकता है। आर्थर लुइस ने बताया की भारत जैसे विकासशील देशों में अदृश्य बेरोजगारी होती है। और कई ऐसे लोग होते है जिनकी सीमान्त उत्पादकता जीरो होती है। वे कहते है कि जीवन निर्वाह स्तर पर उपलब्ध श्रम की असीमित आपूर्ति को उद्योग क्षेत्रो में लगाया जाना चाहिए।

सन्दर्भ सूची

1. झिगन, एम0एल0, विकास का अर्थशास्त्र एवं आयोजन, 2010, पृष्ठ 256
2. www.hindilibraryindia.com
3. भारत की जनगणना – 2011
4. www.pmkvyofficial.org-skill development
5. Ministry of Rural Development- 'Poverty measurement in india', Page -07
6. 6. सेन्टर फार मानिटरिंग इण्डियन इकॉनमी ;ब्डप्द्ध रिपोर्ट 2 मार्च, 2020
7. Unlimited Labour: Further Notes, The Manchester School, 1958 Jan.
8. मूल विचार